P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण 2017) का समीक्षात्मक अध्ययन

जगदीश चन्द्र आमेटा
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय,सी.टी.ई.,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा– दस, संस्करण २०१७) के समीक्षात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त अध्यापकों के अभिमतों के आधार पर कहा जा सकता है कि आलोच्य पुस्तक कई दृष्टियों से उचित है; लेकिन इसमें 'व्याकरण प्रश्नों की मात्रा', 'प्रश्न संरचना', 'वर्तनी' और 'पाठ्यपुस्तक के भीतर विषयवस्तु से संबद्ध संदर्भित चित्र; आदि तथ्यों पर आगामी संस्करण में पुनर्विचार अपेक्षित है। अन्य कतिपय क्षेत्रों पर भी पुनः विचार किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द : माध्यमिक शिक्षा,समीक्षात्मक अध्ययन,क्षितिज

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक काल में शिक्षा का एक संतति से अगली संतति में अन्तरण का माध्यम मात्र मौखिक था। मानव ने चिरकाल के पश्चात् लिपि के सृजनोपरान्त ग्रन्थों की रचना की। तत्पश्चात् शिक्षा का भंडारण एवं संवाहक का माध्यम पुस्तकें बन गईं। बदलते परिवेश के साथ शिक्षार्थियों हेतु पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों के रूप में परिवर्तित होती चली गईं।

पाठ्यपुस्तक के सृजनकारों की स्वाभाविक-मानवीय भूलों में सुधार करके पाठ्पुस्तक को मानक रूप देने हेतु उसका पुनरवलोकन अनिवार्य है। सीधे-सपाट शब्दों में कहा जा सकता है कि मानक पाठ्यपुस्तक हेतु पुनरवलोकन अनिवार्य है। मानक पाठ्यपुस्तक के बिना शिक्षण की स्थिति विशिष्ट से विचित्र होने लगती है। यदि शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक की परवाह किए बिना शिक्षण व्यवहृत होता है तो सम्प्रेषण–अधिगम की प्रक्रिया भी हास्यास्पद बन जाती है। भाषा के शिक्षक हेतु तो पाठ्यपुस्तक के प्रति सजगता और अपरिहार्य है। मानक पाठ्यपुस्तक से शिक्षण प्रक्रिया को सही दिशा और दशा मिलती है।

उच्च माध्यमिक स्तर तक तो शिक्षकों के समक्ष मानक पाठ्यपुस्तक का यक्ष प्रश्न सदैव उपस्थित रहता है। हिन्दी भाषा शिक्षकों के लिए पाठ्यपुस्तक कर्त्तव्य और दायित्व निर्वहन में अनिवार्य आधार है। हिन्दी पाठ्यपुस्तक को पुनरवलोकन की कसौटी पर परखे बिना शिक्षक अपने हिन्दी भाषा के शिक्षार्थियों के साथ संभवतः न्याय नहीं कर पाते हैं। शोधकर्त्ता ने हिन्दी विषय के शिक्षकों के मानस-पटल पर यही प्रश्न चिह्न अंकित करने का प्रयास किया है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण २०१७) के बारे में उनके क्या अभिमत है? यदि 'क्षितिज' पर कोई प्रश्न चिह्न लगता है तो शोधकर्त्ता उसे पूर्णविराम और सकारात्मक विस्मयादिबोधक चिह्न में बदलने हेतु सम्बन्धित पक्षों को शिक्षकों के अभिमतों के आधार पर सुझाव सम्प्रेषित करेगा। शोधकर्त्ता का यही विनम्र प्रयास है।

समस्या कथन

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण 2017) का समीक्षात्मक अध्ययन।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का निम्नांकित उद्देश्य है –

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण २०१७) की सम्बद्ध शिक्षकों

के अभिमतों के आधार पर समीक्षा करके उनके परामर्शानुसार आगामी संस्करण को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुझाव देना।

साहित्यावलोकन

टांक,रमेश चन्द्र (2001), माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की कक्षा 9 व 10 की संस्कृत का समीक्षात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।

पटेल, अल्पा एस. (2005) ईडर तहसील के माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी पाठ्यचर्या के प्रति अभिवृति एवं अधिगम कठिनाइयों का अध्ययन।

मीणा, काह्माराम (2013) एनसीएफ 2005 के सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।

(प्रस्तुत कार्य शोधार्थी का मौलिक कार्य है। इस विषय पर अभी तक शोधार्थी की अधिकतम जानकारी के अनुसार कोई कार्य नहीं हुआ है।)

न्यादर्श चयन

न्यादर्श चयन इस प्रकार किया गया –

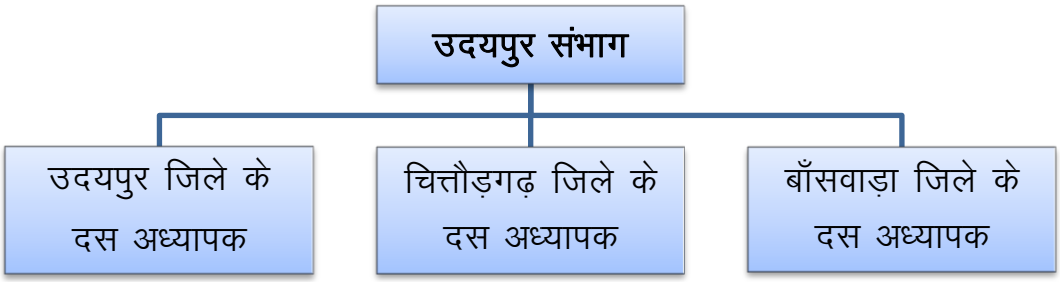

अध्ययन विधि

जिस शोधकार्य का उद्देश्य तात्कालिक परिस्थितियों का अध्ययन और उसकी व्याख्या करना होता है, वहाँ 'सर्वेक्षण विधि' उपयुक्त रहती है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत विधि का चयन किया जाना तय किया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं होने से स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का अनुप्रयोग करना निश्चय किया, जिसे विशेषज्ञों के परामर्शानुसार मानकीकृत किया जाना निश्चित किया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

इस समस्या-अध्ययन में दत्तों का विश्लेषण करने के लिए निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का चयन किया गया है :–

1. प्रतिशत
2. आरेखीय निरुपण

समग्र विश्लेषण

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण २०१७) का चयनित पच्चीस क्षेत्रों में 'कुल अभिमतों' की दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन करने पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, उन्हें प्रस्तुत तालिका और आरेख द्वारा दर्शाया जा रहा है –

'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण २०१७) का कुल अभिमतों की दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन

	पूर्णतः सहमत	प्रायः सहमत	आंशिक सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग
प्राप्त अभिमतों की संख्या	476	116	71	73	14	750
प्राप्त अभिमतों का प्रतिशत	63.47	15.5	9.5	9.7	2	100

पारिभाषिक शब्द

समस्या कथन – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा–दस, संस्करण २०१७) का समीक्षात्मक अध्ययन' की पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत है –

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

यह बोर्ड राजस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर तक पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और संबद्ध परीक्षा के प्रबंधन और संचालन का कार्य करता है।

पाठ्यपुस्तक

यह पाठ्यक्रम के अनुसार सृजित वह पुस्तक होती है, जिसे शिक्षण का आधार बनाया जाता है।

क्षितिज

यह माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा–दस और विषय हिन्दी हेतु नव सृजित पाठ्यपुस्तक (संस्करण २०१७) है।

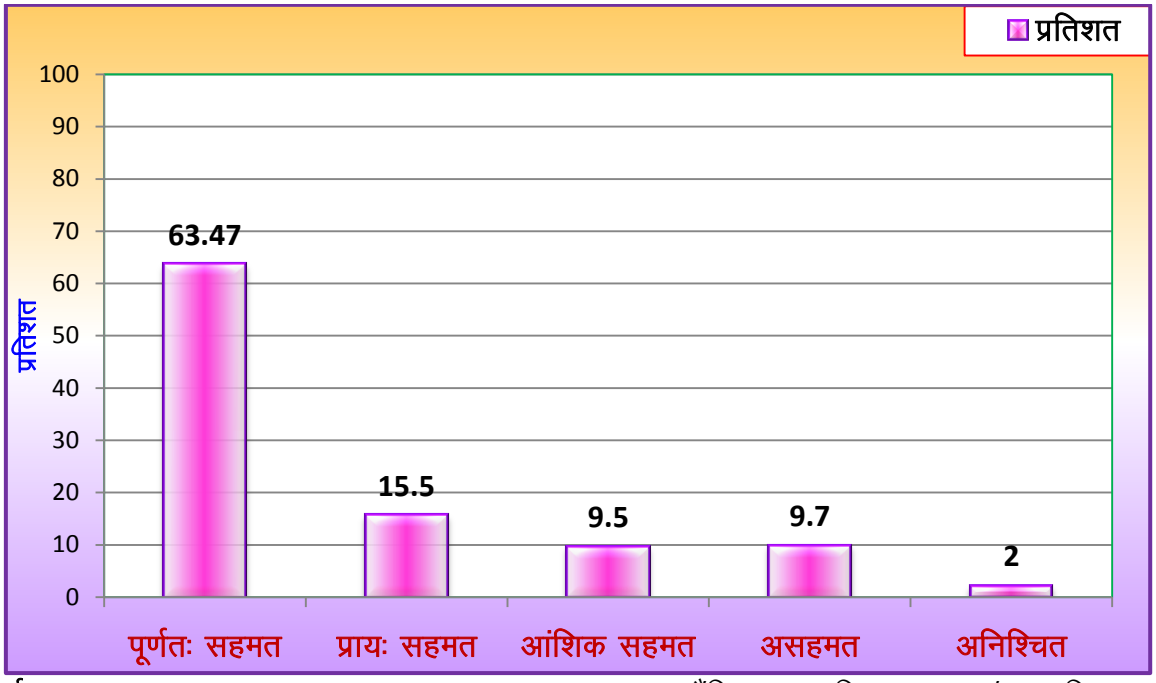

निष्कर्ष

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' (हिन्दी, कक्षा– दस, संस्करण २०१७) के समीक्षात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त अध्यापकों के अभिमतों के आधार पर कहा जा सकता है कि आलोच्य पुस्तक कई दृष्टियों से उचित है; लेकिन इसमें 'व्याकरण प्रश्नों की मात्रा', 'प्रश्न संरचना', 'वर्तनी' और 'पाठ्यपुस्तक के भीतर विषयवस्तु से संबद्ध संदर्भित चित्र; आदि तथ्यों पर आगामी संस्करण में पुनर्विचार अपेक्षित है। अन्य कतिपय क्षेत्रों पर भी पुनः विचार किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुमार, डॉ. अरविन्द (2012), सम्पूर्ण हिन्दी व्याकरण और रचना, लूसेंट पब्लिकेशन, पटना।*
2. *जोशी, डॉ. ब्रजरतन (2010), हिन्दी व्याकरण सार, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर।*
3. *ढौंडियाल, सच्चिदानन्द एवं अरविन्द फाटक (पुनर्संस्करण, 2003), शैक्षिक अनुसंन्धान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
4. *नागर, कैलाश नाथ (1993), सांख्यिकी के मूल तत्त्व, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।*
5. *'भावी', रतन लाल गोयल एवं डॉ. भगवती लाल व्यास (2003), नवीन हिन्दी व्याकरण एवं रचना, अल्का पब्लिकेशंस, अजमेर ।*
6. *मंगल, डॉ. अंशु एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2011), शैक्षिक अनुसन्धान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंन्दिर प्रा.लि., आगरा।*
7. *शर्मा, महेश प्रसाद (2007), हिन्दी प्रभा व्याकरण एवं रचना, मीतल पब्लिशिंग हाऊस, मथुरा।*
8. *सक्सैना एन.आर. एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2003), अध्यापक शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।*